तटस्थता वक्र-रेखाएँ : अर्थ एवं विशेषताएँ

[INDIFFERENCE CURVE : MEANING & CHARACTERISTICS]

उपयोगिता विश्लेषण के दोष (Defects of the Utility Analysis)—**मार्शल** (Marshall) ने अपने मांग-सिद्धांत की व्याख्या उपयोगिता दृष्टिकोण (Utility approach) के आधार पर की है। किन्तु आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण कई दोषों से परिपूर्ण है **जिनमें निम्नांकित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं :**

1. उपयोगिता अमापनीय है—मार्शल के मांग-सिद्धांत की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि यह उपयोगिता मापनीय है (Utility is measurable) की धारणा पर आधारित है। किंतु उपयोगिता एक मानसिक स्थिति है, अतएव यह अमापनीय है, और जब उपयोगिता की माप नहीं हो सकती, तो उपयोगिता पर आधारित मांग का सिद्धान्त भी सही नहीं हो सकता।

2. उपयोगिता एक वैयक्तिक भावना है—इतना ही नहीं, उपयोगिता एक वैयक्तिक भावना है, एक मनोवैज्ञानिक धारणा है, वस्तुगत नहीं। अतः एक व्यक्तिगत भावना (Subjective feeling) को वस्तुगत पैमाने (Objective standard) से मापने का प्रयास व्यर्थ है।

उपयोगिता विश्लेषण के दोष
1. उपयोगिता अमापनीय है,
2. उपयोगिता एक वैयक्तिक भावना है,
3. केवल एक वस्तु से सम्बद्ध;
4. कोई निश्चित मापदंड उपलब्ध नहीं,
5. अविभाज्य वस्तुएँ,
6. मुद्रा की सीमांत उपयोगिता परिवर्त्तनशील है।

3. केवल एक वस्तु से सम्बद्ध—साथ ही, मार्शल की मांग-सम्बन्धी व्याख्या केवल एक ही वस्तु (One-commodity model) से सम्बन्धित है। इसे सम्बद्ध वस्तुओं (Related goods), अर्थात् स्थानापन्न एवं पूरक वस्तओं (Substitutes and complementary goods) के संबंध में लागू नहीं किया जा सकता। किन्तु वास्तविक जीवन में कोई भी व्यक्ति एक साथ एक ही वस्तु को नहीं खरीदता, वरन् एक से अधिक वस्तुओं को खरीदता है। ऐसी स्थिति में मार्शल का विश्लेषण अपूर्ण ही रह जाता है।

4. उपयोगिता को मापने के लिए कोई निश्चित एवं स्थिर मापदण्ड भी नहीं है। मार्शल (Marshall) ने उपयोगिता को मापने के लिए द्रव्य-रूपी मापदण्ड (Measuring rod of money) का प्रयोग अवश्य किया है, किन्तु द्रव्य-रूपी मापदण्ड स्वयं स्थिर नहीं है, इसके मूल्य में सदा परिवर्त्तन होते रहते है।

5. अविभाज्य वस्तुएँ (Indivisible goods)—उपयोगिता-विश्लेषण अविभाज्य वस्तुओं जैसे—मोटर गाड़ी, मकान, कोई बड़ा यन्त्र इत्यादि की मांग को व्यक्त करने के लिए भी अपूर्ण पद्धति है। उपभोक्ता एक समय में इन वस्तुओं की प्रायः एक ही इकाई का उपभोग करता है। अतएव इनकी सीमांत उपयोगिता का पता लगाना कठिन है। इसीलिए इनकी व्यक्तिगत मांग की तालिका भी नहीं तैयार की जा सकती।

6. मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर नहीं रहती :—अन्ततः, मार्शल (Marshall) ने मुद्रा की सीमांत-उपयोगिता को स्थिर मान लिया है, जो उचित नहीं है। वास्तव में मुद्रा की सीमन्त उपयोगिता में भी परिवर्त्तन होते रहता है।

तटस्थता वक्र-विश्लेषण
(Indifference Curve Analysis)

मार्शल के मांग-सिद्धान्त की इन त्रुटियों को दूर करने के लिए **हिक्स** (Hicks) तथा एलेन (Allen) आदि अर्थशास्त्रियों ने मांग की व्याख्या के लिए तटस्थता की वक्र-रेखाओं (Indifference Curves) का प्रयोग किया है। इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार उपयोगिता तुलनीय है, मापनीय नहीं। यद्यपि कोई उपभोक्ता किसी वस्तु के उपभोग से उसे कितनी उपयोगिता मिलती

Scanned with CamScanner

हैं, यह नहीं बतला सकता तथापि इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह एक वस्तु अथवा वस्तु-संग्रह की उपयोगिता की तुलना दूसरी वस्तु-संग्रह की उपयोगिता से कर सकता है। वह वस्तुओं के एक संग्रह को दूसरे के बराबर या उससे कम या अधिक उपयोगी मानता है। किन्तु वह किसी एक वस्तु-संग्रह को क्यों या कितना अधिक पसन्द करता है, यह नहीं कहा जा सकता। हिक्स तथा एलेन आदि अर्थशास्त्रियों के अनुसार इस बात को जाने बगैर भी केवल उपभोक्ता के अधिमान क्रम (Order of Preferences) के आधार पर ही तटस्थता की वक्र-रेखाओं के द्वारा उपभोक्ता की मांग का सन्तोषजनक सिद्धान्त प्रतिपादित किया जा सकता है। इस प्रकार उपयोगिता विश्लेषण' का दृष्टिकोण 'संख्यात्मक' (Cardinal approach) है जबकि 'तटस्थता-विश्लेषण' का दृष्टिकोण क्रमसूचक (Ordinal approach) है। इस प्रकार के विश्लेषण के अन्तर्गत यह जानने की आवश्यकता नहीं होती कि किसी वस्तु-विशेष से उपभोक्ता को कितनी उपयोगिता या सन्तुष्टि मिलती है। इसमें वस्तुओं को क्रय करते समय उपभोक्ता केवल प्राथमिकता के क्रम को ध्यान में रखता है, यानी वस्तुओं को उनके महत्त्व के अनुसार रखता है।

तटस्थता वक्र-विश्लेषण के विकास का संक्षिप्त इतिहास (A Brief Historical Evolution of the conceft of Indifference Curve)—तटस्थता वक्र-विश्लेषण का प्रतिपादन सर्वप्रथम 1881 में सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री एजवर्थ द्वारा किया गया था। आगे चलकर 1926 में पैरीटो (Vilfredo Pareto) ने इस विचार को और अधिक विकसित किया। किन्तु, मांग के विश्लेषण में इनके सफल प्रयोग का श्रेय प्रो० हिक्स (Prof. J. R. Hicks) एवं एलेन (R. G. D. Allen) को है। इन लोगों ने 1934 ई० में "A Aeconsideration of the Theory of Value" नामक एक निबन्ध में तटस्थता की वक्र-रेखाओं का प्रयोग किया था। बाद में, इसका सविस्तार विवरण प्रो० हिक्स ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'Value and Capital' में किया।

तटस्ता की वक्र-रेखाओं का अर्थ (Meaning of Indifference Curve) - तटस्थता की वक्र-रेखाएँ वे रेखाएँ हैं जिनपर स्थित प्रत्येक बिन्दु किन्हीं दो वस्तुओं के ऐसे संयोगों (Combinations) को बतलाते हैं जिनसे उपभोक्ता को बिल्कुल समान संतुष्टि मिलती है। अतएव दोनों वस्तुओं के इन विभिन्न संयोगों के बीच उपभोक्ता पूर्णतया उदासीन अथवा तटस्थ (Indifferent) रहता है, यानी इनमें से किसी एक के प्रति वह विशेष रूप से आकर्षित नहीं होता। इस वक्र-रेखा पर जितने भी बिन्दु होते हैं वे दोनों वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को दिखलाते हैं जिनसे उपभोक्ता को एक समान सन्तुष्टि प्राप्त होती है। अतएव प्रत्येक संयोग (Combination) से समान संतुष्टि मिलने के कारण इन संयोगों के बीच चुनाव के सम्बन्ध में उपभोक्ता बिल्कुल तटस्थ रहता है, यानी वक्र-रेखा पर प्रदर्शित प्रत्येक संयोग को वह एक समान महत्त्व देता है। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता के लिए वस्तुओं के इन भिन्न-भिन्न संयोगों का महत्त्व एक समान होता है; अतएव उसे दोनों वस्तुओं के इन संयोगों में से कौन-सा संयोग मिले इस ओर वह उदासीन अथवा तटस्थ रहता है। इसलिए इस प्रकार की वक्र-रेखाओं को उदासीनता अथवा तटस्थता की वक्र-रेखाएँ (Indifference Curves) कहा जाता है। जे० के० इस्थम (J. K. Easthem) के अनुसार, "यह दो मात्राओं के उन विभिन्न संयोगों को प्रदर्शित करनेवाले बिन्दुओं का मार्ग है जिनके बीच उपभोक्ता तटस्थ रहता है, अतएव इसे तटस्थता की वक्र-रेखा कहते हैं।" (It is the locus of the points representing a pair of quantities between which the individual is indifferent. So it is termed as an indifference curve.) दूसरे शब्दों में, "जिस वक्र पर एक समान सन्तुष्टि प्रदान करने वाले वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को दिखलाया जाता है, उसे उदासीनता वक्र कहते हैं।" (The curve on which combinations of goods yeilding the same tatal satisfaction are shown is known as indifference curve.) और चूँकि तटस्थता-वक्र पर प्रत्येक बिंदु एक समान सन्तोष व्यक्त करते हैं, अतएव इसे 'समान सन्तुष्टि की रेखा' (Iso-utility curve) भी कहते हैं।

तटस्थता-वक्र विश्लेषण का एक उदाहरण—तटस्थता वक्र-विश्लेषण की व्याख्या इस बात पर आधारित है कि प्रत्येक उपभोक्ता का दो या दो से अधिक वस्तुओं के बीच एक अधिमान-क्रम (Scale of Preferences) होता है। प्रत्येक अधिमान-क्रम दो या दो से अधिक वस्तुओं के उन वैकल्पिक संयोगों (Alternative combinations) का होता है जिनसे उपभोक्ता को एक समान

Scanned with CamScanner

संतोष प्राप्त होता है। अतएव उपभोक्ता इनमें से यदि एक संयोग को चुनता है तो वह अन्य संयोगों के प्रति तटस्थ अथवा उदासीन रहता है। नीचे नारंगी एवं सेव दो वस्तुओं के इस प्रकार के विभिन्न संयोगों की एक तालिका दी जा रही है जिससे उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि प्राप्त होती है—

संयोग	नारंगी + सेव	प्रतिस्थापन की दर (Rate of Substitution)
प्रथम संयोग	4 नारंगी + 25 सेव	.....
द्वितीय संयोग	5 ,, 20 ,,	1 नारंगी = 5 सेव
तृतीय संयोग	6 ,, 16 ,,	1 नारंगी = 4 सेव
चतुर्थ संयोग	7 ,, 13 ,,	1 नारंगी = 3 सेव
पंचम संयोग	8 ,, 11 ,,	1 नारंगी = 2 सेव
इत्यादि	इत्यादि	इत्यादि।

उपरोक्त तालिका में नारंगी एवं सेव के उन विभिन्न संयोगों को प्रदर्शित किया गया है जिनसे उपभोक्ता को एक समान संतोष प्राप्त होता है। इससे यह स्पष्ट नहीं है कि इनमें से किसी एक संयोग से कितना संतोष मिलता है, क्योंकि संतोष अमापनीय है। यदि नारंगी एवं सेव के इन विभिन्न संयोगों को हम एक वक्र-रेखा के माध्यम से व्यक्त करें तो वह रेखा तटस्थता की वक्र-रेखा कहलायेगी जैसा कि नीचे के चित्र में IC वक्र-रेखा से स्पष्ट है।

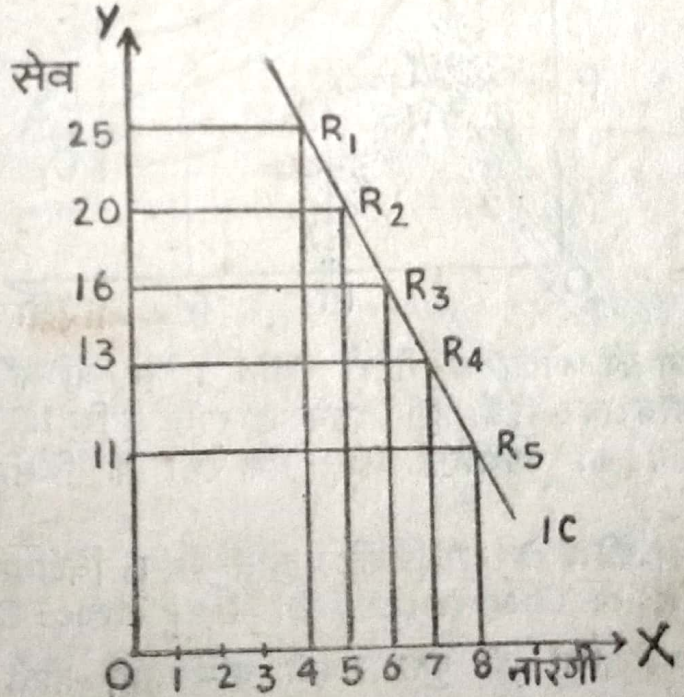

उपरोक्त चित्र नारंगी एवं सेव के विभिन्न संयोगों के आधार पर तैयार किया गया है। IC तटस्थता की वक्र-रेखा (Indifference curve) है। इनमें R^1, R^2, R^3, R^4, R^5, बिन्दु क्रमशः नारंगी एवं सेव के पाँच विभिन्न संयोगों से बने हैं। ये पाँचों बिन्दु यद्यपि नारंगी एवं सेव के पाँच विभिन्न संयोगों को व्यक्त करते हैं, फिर भी इनसे उपभोक्ता को प्रायः एक समान संतोष मिलता है। अतएव उपभोक्ता इनके बीच बिल्कुल तटस्थ अथवा उदासीन रहता है, यानी उपभोक्ता 4 नारंगी एवं 25 सेव चुने अथवा 6 नारंगी एवं 16 सेव, यह निर्णय करना उसके लिए कठिन है। इससे स्पष्ट है कि तटस्थता की वक्र-रेखा बिल्कुल 'एक समान संतुष्टि-रेखा' (ISO-Utility Curve) होती है, अर्थात् किसी दी हुई तटस्थता की रेखा पर प्रत्येक बिन्दु उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner